

प्रवाल भित्तियों का निर्माण मुँगा या प्रवापी जीवों के आरथि पंजरों के समेकन एवं संयोजन द्वारा होता है।

प्रवापी जीवों के विकास की अनुकूल या भौगोलिक दशाएँ :-

① प्रवाल मुख्य रूप से उष्ण करिबिणीय भागों ($30^{\circ}N - 30^{\circ}S$ में) पाए जाते हैं, क्योंकि इनके जीवन रहने के लिए $20^{\circ}C$ से $27^{\circ}C$ तापमान उपयुक्त होता है।

② प्रवाल कम गहराई (200 - 250 फीट या 66-77 मी. पर) पाए जाते हैं, क्योंकि अधिक गहराई पर सूर्य के प्रकाश एवं आक्सीजन का अभाव होता है।

③ प्रवालों के विकास के लिए जल का अवसाद-रहित होना चाहिए क्योंकि अवसादों के कारण प्रवाल का मुख बंद हो जाता है एवं वे मरे जाते हैं।

④ पूर्ण स्वच्छ जल प्रवाल के लिए हानिकारक होता है।

⑤ आसन्न सागरीय लवणता 27% - 30% होता है।

प्रवाल शिक्ति के प्रकार

- ① तटीय प्रवाल शिक्ति (Fringing Reef)
- ② अवरोधक प्रवाल शिक्ति (Barrier Reef)
- ③ वलयकाक प्रवाल शिक्ति (Atoll)

शैलियाँ प्रायः तीन प्रकारके होती हैं।

- ① वास्तविक प्रवाल वलय द्विद्वय लैंगून के चारों ओर घिरे होते हैं कोई लैंगून द्वीप नहीं होती
- ② एक ऐसा प्रवाल वलय जिसमें शिक्ति एक शैली लैंगून का घेरी है जिसमें एक द्वीप है
- ③ ऐसी वलयकाक प्रवाल शिक्ति जिसके मध्य में पहले से कोई द्वीप नहीं है, परन्तु आगे चलकर सागरीय तरंगों के अपरदन एवं निक्षेपण क्रिया द्वारा एक नए द्वीप का निर्माण हो गया।

शैलियाँ द्वीपका Funafuti Atoll
वलयकाक प्रवाल शिक्ति का उदाहरण है।

प्रवाल शिकियों की उत्पत्ति से जुड़े सिद्धांत

अ - अवतमन सिद्धांत - डार्विन

स्थिर स्थल सिद्धांत - मर्रे

डिम्बानी नियंत्रण सिद्धांत - डेसी

अवतमन सिद्धांत का सर्वप्रथम प्रतिपादक Chamisso ने किया था, परन्तु इसकी पूर्ण एवं विस्तृत व्याख्या Darwin द्वारा की गई। इसी सिद्धांत का स्वतंत्र रूप से Dana (Dana) ने भी प्रतिपादन किया।

मर्रे के आलावा खगोलज्ञ, गार्डिनर एवं डेसी का सिद्धांत स्थल खंडों की स्थिरता पर आधारित है।

का अभाव होता है।

